आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 348 ARYA SABHA MAURITIUS *1st Dec. to 11th Dec. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ईश्वर का स्वरूप

LES ATTRIBUTS DE L'ETRE SUPRÊME

ओ३म् अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो नकुतश्चनोनः
तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम।।

अथर्ववेद १०/८/४४

Om ! Akamo dheero amritah swayambhu rasena tripto nakutashchanonah.
Tameva vidwān na vibhāya mrityorātmānam dhiramajaram yuvānam.

Atharva Veda 10/8/44

Glossaire / Shabdārtha

akāmah - désintéressé, qui n'agit pas par intérêt égoïste; **dheerah** - résolu, calme, stable, persévérant, immuable, maître de soi, beau, gentil, patien ; **amritah** - immortel ; **swayambhu** - celui qui n'est pas né de quiconque et n'a ni commencement ni fin. Il est éternel; **rasena** - débordant de courage, d'énergie ou de vigueur; **triptah** - complet, parfait ; **kutah chan** - de n'importe où ; **ounah** - inferieur, déficient, imparfait, incomplet ; **na** - il n'y a pas ; **tam eva** - sur cela, à cela ; **dheeram** - les sages ; **ajaram** - immortel, éternel ; **yuvanam** - très puissant, ; **ātmānam** - l'être Suprême / Dieu ; **vidwān** - l'homme qui le connait; **bibhāya** – n'a pas peur de ; **mrityum** - la mort ou la souffrance ; **ajaram** – immortel, éternel ; ātmānam; l'être Suprême / Dieu ; **bibhāya** – n'a pas peur de ; **mrityum** – la mort ou la souffrance.

Interprétation / Anushilan

Dieu n'a aucun désir. Il est toujours calme et résolu. Il est immortel, éternel et pénétrant tout. Il est incréé. C'est-à-dire, Il n'est pas né de quiconque et Il n'a ni commencement ni fin. Il est immuable et le détenteur de toutes les connaissances, de la richesse matérielle et de la Félicité Éternelle (Moksha). Il n'a aucun défaut. Il est parfait. Il est aussi le Juge Suprême qui administre la justice équitablement à tout le monde.

Ayant bâtis une foi inébranlable en cet être Suprême qui est tout-puissant, Omniscient, Omniprésent et miséricordieux, les sages / les fidèles n'auront pas peur d'affronter la mort ou la souffrance et atteindront le Bonheur Suprême (param ānand / Moksha) par la grâce du Seigneur.

N. Ghoorah

हमारा युवा-वर्ग

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न - प्रधान आर्य सभा

सन् २०१६ आर्य युवक संघ के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष के रूप में स्मरण किया जाएगा । इस वर्ष के १५ अगस्त को आर्य युवक संघ ने रामोतार मोहित भवन में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया था। फिर इस संघ ने सितम्बर मास से अपना मुखपत्र – 'The Youth Magazine' निकालना प्रारम्भ किया और दिसम्बर के आरम्भ में पहली तारीख से एक छः दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। पूर्वी अफ्रीका के युगाण्डा और दक्षिण अफ्रीका के दर्बन से युवाओं ने डॉक्टर बिसराम रामबिलास के मार्गदर्शन में इस सम्मेलन में भाग लिया। इस महासम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य था – आर्य युवकों को समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराना एवं उन्हें समाज-सेवा का उत्तराधिकारी बनाना।

प्रतिदिन शताधिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों ने इस युवा-सम्मेलन को अपनी उपस्थिति से सुशोभित किया। मुख्य विषय से सम्बंधित कई उपविषयों पर युवक-युवतियों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। प्रतिभागियों ने अपने अर्जित ज्ञान से सिद्ध कर दिया कि वे समाज की बागडोर थामने की क्षमता रखते हैं।

प्रश्न उठता है कि आर्य युवक कैसे हों। यजुर्वेद में एक सूक्ति आई है, जिसमें एक गृहस्थी भगवान् से प्रार्थना करता है कि उसके गृह की शोभा कैसे पुत्र-पुत्रियों से हो? सूक्ति इस प्रकार है – **सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्** – अर्थात् माता-पिता की कामना है कि उनके घर में सभ्य, यजमान और वीर सन्तानें उत्पन्न हों। इस सूक्ति के द्वारा माता-पिता यही मनोकामना करते हैं कि उनके पुत्र अच्छे हों। मन्त्र में एक अच्छे युवा के तीन गुण बताये गये हैं। पहला गुण है कि वह सभ्य हो। सभ्य व्यक्ति वह होता है,जो सभा-समाज में शिष्टाचारपूर्वक उठता-बैठता है।

दूसरा गुण है – यजमान होना। यजमान दूसरों के सुख के लिए तप-त्याग करते हैं। वे दूसरों के उपकार में अपना जीवन समर्पित करते हैं। दूसरों के जीवन को सुगन्ध से भर देते हैं। एक अच्छे युवक का तीसरा गुण है – वीर होना। वीर कई प्रकार के होते हैं – जैसे धर्मवीर, कर्मवीर, युद्धवीर, दानवीर आदि। वह युवक धर्मवीर है, जो धर्म के पालन में कभी पीछे नहीं हटता। वह धर्म की माला को गले में धारण करता है। धर्म की रक्षा के लिए महान् से महान् त्याग करने के लिए सदा तत्पर रहता है।

कर्मवीर वह है, जो कठिन से कठिन काम करने में हमेशा तैयार रहता है, उसमें तनिक भी प्रमाद नहीं होता। दानवीर वह है, जो समाज की भलाई के लिए हाथ खोलकर दान देता है, चाहे वह धन-दान हो या समय का दान हो। सबसे बड़ा दानवीर तो विद्या का दानी होता है। एक होता है - शूरवीर, जो अपनी मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राणों को न्यौछावर कर देता है।

सभी वीर आदरणीय होते हैं। धन्य हैं वे माता-पिता, जिनके घर में सभ्य, यजमान और वीर युवक होते हैं।

एक बार महात्मा गांधी जी के सबसे प्रिय शिष्य, आचार्य विनोबा भावे से दो प्रश्न पूछे गये। पहला यह कि नवजवान कौन है और दूसरा कि बूढ़ा कौन है? उन्होंने दोनों प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहा कि जो आलसी है, निकम्मा है *शेष भाग पृष्ठ २ पर*

सम्पादकीय

एक चमत्कारी आविष्कार

आज विज्ञान का चमत्कारी युग है। इस वैज्ञानिक युग में समस्त संसार विज्ञान की सहायता से विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है। इसकी प्रचुर उपयोगिताओं द्वारा मनुष्य के दैनिक जीवन में विविध प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं। कई कठिन और असम्भव कार्य भी आज सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो रहे हैं।

विज्ञान ने हमें स्थलयान, जलयान और नभयान में यात्रा करने का अवसर प्रदान किया है। रॉकिट, साटिलाइट द्वारा आकाश मण्डल, चन्द्रमण्डल और अन्य ग्रहों में जाने के साधन भी प्रदान किये हैं, जिनके सहारे मानव नये-नये आविष्कार कर रहा है। वह नवीनतम खोजों के माध्यम से प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

आज विज्ञान के बिना जीना दुष्कर हो गया है। जिन कार्यों को निभाने में पहले घण्टों लग जाते थे, वे आज चन्द मिनटों में विज्ञान की मदद से पूरे हो जाते हैं। नई मशीनों, यंत्रों और कई उपकरणों से इन्सान कठिन से कठिन कार्य करने में सफल हो रहा है। विज्ञान हमारे जीवन के लिए अति उपयोगी साधन साबित हो रहा है।

हमारे मनोरंजन के लिए ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, कासेट आदि का अविष्कार किया गया। ताज़ा समाचार निमित, टेलीफ़ोन, टेलिग्राफ़, मोबाइल, आदि उपकरणों का अविष्कार किया गया, जिन साधनों से हम देश-विदेश के समाचार घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। इन सब आविष्कारों के बाद अब एक अति चमत्कारी आविष्कार 'कम्प्यूटर' है, जो हमारे लिए एक अद्‌भुत उपलब्धि है। यह हर काम बड़े सुचारू रूप से करता है और अत्यन्त पेचीदे सवाल का हल तुरन्त कर सकता है। यह मनुष्यों की तरह कोई त्रुटि नहीं करता है। अपने दिमाग के बल पर अन्य यंत्रों को भी नियन्त्रित करता है, क्योंकि इसकी स्मृति बड़ी तीक्ष्ण होती है।

आज कम्प्यूटर के माध्यम से ऐसे अनेक कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, जिनके फल स्वरूप मनुष्य प्रगतिशील होता जा रहा है। इस चमत्कारी यंत्र द्वारा एक आदमी अनेक व्यक्तियों के कार्यों को आसानी से सम्भाल रहा है और कोई त्रुटियाँ नहीं छोड़ रहा है।

अब ऐसे कम्प्यूटर भी बन चुके हैं, जो स्वयं पढ़-लिख सकते हैं। संगीत-रचना कर सकते हैं। दिन प्रतिदिन इसकी कार्य प्रणाली में विकास होता जा रहा है। कम्प्यूटर में ऐसे अनेक गुण होते हैं, जो बड़े ही चमत्कारी होते हैं ।

वैज्ञानिकों ने जब कम्प्यूटर का आविष्कार किया तो मानों मनुष्य की दिमागी क्षमता बढ़ गई। कम्प्यूटर के चमत्कारी दिमाग से सर्वांगीण विकास होने लगा। आज का मानव इन्टरनेट (Internet), स्काइप (Skype), वाटसाब (Watsapp), यूचुब (YouTube), फैसबूक (FaceBook), टाब्लेट (Tablette), वेबसाइट (Website) आदि के माध्यम से तरह-तरह की जानकारी प्राप्त कर सकता है। यहाँ तक कि वह Telephone, CEB, MRA, CWA आदि के Bill चुका सकता है और खरीदारी भी कर सकता है। हम घर बैठे कम्प्यूटर द्वारा अनेक प्रकार के कार्य कर सकते हैं ।

कम्प्यूटर एक ऐसा नवीनतम आविष्कार है, जिसपर विज्ञान को अति गर्व है। परन्तु इसमें यह कमी है कि इस चमत्कारी यंत्र के पास तेज़ दिमाग तो है, परन्तु दिल नहीं। इसमें संवेदना-शक्ति नहीं। यह हमारे जीवन के हर्ष और शोक की चर्चा कर सकता है, लेकिन कभी हर्षित और शोकातुर नहीं हो पाता है।

आधुनिक युग में कम्प्यूटर हमारे जीवन के लिए सर्वोत्तम साधन बन गया है । इसका सही उपयोग करना चाहिए, अन्यथा इसका दुरुपयोग करने से सब की हानि निश्चित है।

हमारी यही आशा है कि इस चमत्कारी आविष्कार से मानव-जाति का भला होता रहे।

बालचन्द तानाकूर

त्यागमूर्ति : लखावती हरगोबिन

श्री सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न - मंत्री आर्य सभा

मोरिशस के पूर्व में जो ज़िला है वह फ़्लाक नाम से जाना जाता है। यह एक डच्छ नाम है। १७ वीं शताब्दी में डच्छ लोग आबनूस के पेड़ काटते-काटते पूर्वी इलाके में चले आये थे। इसी ज़िले में बोनाकेई के पास बृज़ेवरजियेर नाम का ग्राम है जिसमें लखावती का जन्म १६ नवम्बर सन् १९२६ में हुआ था। पिता का नाम था बालगोबिन और माँ का तेतरी। परबोतिया इन के परिवार का नाम था। लखावती के पिता प्यार से उसे देवन्ती नाम से पुकारते थे। उनकी छोटी बहन कौशल्या लक्ष्मण का कहना है कि इनको इसी उपनाम पाठशाला में प्रमाण-पत्र मिलते थे या पारितोषिक के रूप में पुस्तकें मिलती थीं। उस समय हिन्दू समुदाय में बोलते थे कि एक कागज़ का नाम और एक पुकारने का नाम, लेकिन आज यह कम प्रचलित है।

लखावती से पहले पारबोतिया दम्पति के चार बेटे हुए थे। पहला था गणेश, दूसरा था महेश, तीसरा रामनेश, चौथा देवनेश। लखावती के बाद वेदवन्ती, धरमावती जो कौशल्या नाम से जानी गयी और आगे चलकर पंडिता कौशल्या लक्ष्मण बनी। अन्त में उनके दो भाई और हुएः - वाल्मीक और राधाकिसुन। दोनों आज अवकाश प्राप्त मुख्य अध्यापक हैं। वाल्मीक बेल रोज़ रहता है और राधाकिसुन क्यूरपीप में वास करता है।

लखावती की औपचारिक पढ़ाई बोनाकेई की कैथोलिक इम्दादी पाठशाला (Catholic Aided School) में पाँचवी कक्षा तक हुई थी। जब वह अंग्रेज़ी-फ्रेंच की पाठशाला में पढ़ती थी तो उनकी एक सहेली थी, भाग्यवती रामदूर नाम की, जो छठी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण करके बोनाकेई आर्य परोपकारिणी कन्या पाठशाला में विद्या अध्ययन करने जाया करती थी। वह जब भी लखावती से मिलती तो अपनी हिन्दी पाठशाला की प्रशंसा ज़रूर करती। सुबह से शाम तक की दिन-चर्या की चर्चा किया करती। भाग्यवती बढ़ा-चढ़ा कर आर्य परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित पाठशाला की चर्चा इस उद्देश्य से करती कि लखावती भी उस पाठशाला में आ जाय। अन्त में वह सफल भी हो गई ।

आखिर एक दिन साहस बटोरकर लखावती ने उस पाठशाला में जाने का निश्चय कर ही लिया। वह नादान थी। उन्हें क्या मालूम था कि छठी कक्षा पास करने के बाद क्या फायदा होता। उस वक्त छठी पास लड़के व लड़की को अध्यापन करने का मौका दिया जाता।

उस हिन्दी पाठशाला में प्रवेश पाने के लिए कुछ नियम पालन करना था। पहला नियम था ओढ़नी धारण करना उसने चुपके से जाकर माता जी की ओढ़नी चुराकर अपने बस्ते में रख दी। उस दिन पाठशाला न जाकर आर्य परोपकारिणी पाठशाला का रास्ता ले लिया। उक्त पाठशाला की संचालिका श्रीमती भंजन ने बालिका का हार्दिक स्वागत किया।

जब घर वालों को उस बात का पता चला कि स्कूल न जाकर वह कन्या पाठशाला जा रही है तो उसके अभिभावकों ने बहुत कोशिश की वापस स्कूल भेजने की लेकिन उसकी ज़िद्द के सामने किसी का कुछ न चला। फिर वह नियमित रूप से, कन्या पाठशाला में जाती रही और शेष पढ़ाई वहीं पूरी की। वहाँ हिन्दी के माध्यम से गणित, भूगोल, धार्मिक शिक्षा, हवन-यज्ञ, भजन-कीर्तन भी सिखाया जाता था। सन् ४० के वर्षों में धर्म परिवर्तन के डर से हिन्दू समुदाय के लोग, अपनी लड़कियों को सरकारी या गैर सरकारी स्कूल नहीं भेजते थे।

लखावती न केवल पढ़ाई में ही मन लगाती थी, बल्कि घर के कामों को भी दिल से करती थी। स्कूल के दिनों में अपने भाई-बहनों को नहा-धुला कर तैयार करके अपने साथ टोली बनाकर स्कूल जाती थी। रास्ते में और बच्चे मिल जाते तो सब की मुखिया बनकर स्कूल तक साथ जाती। पिता जी का कहना था कि किसी को रास्ते में न छोड़ें। सभी को आगे करके स्वयं पीछे चलती थी। पाठशाला में भी अध्यापिका जी की सहायता करती थीं। ऐसा लगता था कि जन्म से ही वह नेतृत्व करने आयी थीं।

स्कूल की छुट्टी के बाद सभी बच्चों की टोली बनाकर लौटतीं। प्रतिदिन माँ रास्ते के किनारे खड़ी होकर बच्चों की राह देखा करतीं।

इस प्रकार १७ वर्षों तक उस पाठशाला में पढ़ाई की। उस कन्या पाठशाला की मुख्य अध्यापिका श्रीमती कुलवन्ती भंजन थीं। हिन्दी अध्यापिकाओं में श्रीमती देवन्ती डोमा और श्रीमती तिलक थीं। श्री हरिभजन से संस्कृत और लघु सिद्धान्त कौमुदी की शिक्षा प्राप्त की। वहीं पर सिलाई-कढ़ाई और भोजन बनाने या पाक विज्ञान की शिक्षा पाई। एक प्रकार से वह गृहिणी बनने की तैयारी कर चुकी थी। साथ ही साथ सामाजिक सेवा करने के सारे गुण अन्दर ही अन्दर तैयार हो रहे थे।

आर्य समाज का इतना बड़ा प्रभाव था कि बाल विवाह का नाम नहीं सुनना चाहते थे। पूरे १८ वर्ष की उम्र में पाणिग्रहण किया बेलरोज़ निवासी देवदत्त हरगोबिन से। ब्रह्मचर्य आश्रम में तो विद्या उपार्जन करते ही हैं। शास्त्रों के मुताबिक गृहस्थ आश्रम में भी अध्ययन ज़ारी रखना चाहिए। बाल्यावस्था और गृहस्थाश्रम में अध्ययन करती रही। १९५० में हिन्दी अध्यापक की माँग सरकार की ओर से हो रही थी। उन्होंने आवेदन पत्र भरा और परीक्षा में सफल भी हुई। १९५० में बो बासें के प्रशिक्षण महाविद्यालय में लखावती ने प्रशिक्षण पाया। उसके साथ और ६ महिलाएँ थीं जिनको अध्यापन करने का प्रमाण पत्र मिल गया। १९५४ में स्कूल में पढ़ाने के लिए नियुक्त हुई। उनकी पहली नियुक्ति कारचिये मिलितेर की चर्च ओव इंगलेण्ड ऐडड स्कूल में हुई थी जहाँ पर लगातार बारह वर्षों तक काम करने के बाद बेचू माधु सरकारी पाठशाला में तब्दिल हुई और वहाँ से बोसेजूर स्कूल में पूरे सात साल तक काम करने के बाद अवकाश ग्रहण किया। लेकिन हिन्दी पढ़ाने वालों की कभी होने के कारण सरकार की माँग पर और छः महीने की अतिरिक्त सेवा दी। १९६० में पूरे तौर पर सरकारी नौकरी से मुक्त हो गयी पर सामाजिक सेवा में बाकी जीवन के लम्बे समय तक सक्रिय रही ।

विवाह के पश्चात् हरगोबिन दम्पत्ति को पाँच बच्चों के मुँह देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ – तीन बेटे और दो बेटियाँ। तीन पुत्र असमय ही भगवान को प्यारे हो गए और एक बेटी पैदा होते ही चल बसी। बच गई केवल देव्यानी। देव्यानी को बहुत ही लाड़-प्यार से पाला। मोरिशस में पढ़ाई समाप्त कर लण्डन गयी जहाँ से स्नातक बनकर लौटी। लौटने के बाद पाम्प्लेमूस के डाक्टर प्रभु उदन से उसका विवाह हुआ और समय के साथ पाँच संतानें हुईं । फिर देव्यानी भी अपने भौतिक शरीर छोड़कर सदा के लिए चली गई। **क्रमशः**

पृष्ठ १ का शेष भाग

और निठल्ला बनकर बैठा रहता है, चाहे उसकी उम्र पच्चीस वर्ष की ही क्यों न हो, वह सौ वर्ष का बूढ़ा है और सौ वर्ष की आयु वाला व्यक्ति यदि परिश्रमी है, सदा सक्रिय रहता है तो वह अब भी पच्चीस वर्ष का जवान ही है।

आचार्य विनोबा भावे जी ने अपने उत्तरों से युवा और वृद्ध की परिभाषा स्पष्ट कर दी। आज युवक कहलाने वाले कई ऐसे लोग दिखाई देते हैं, जो निष्क्रिय पड़े रहते हैं। ऐसे लोग सचमुच बूढ़े के समान कमज़ोर और बीमार होते हैं ।

भारत के राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी लिखते हैं –

हे नवयुवाओ! देश भर की दृष्टि तुम पर ही पड़ी।
है मनुज जीवन की ज्योति तुमीं में सबसे जगमगी।।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में।
देखो कहाँ क्या हो रहा आज सारे संसार में ।

इस कविता में महान् राष्ट्रकवि ने यही बताया है कि नवजवान शक्ति का पुँज होता है। ईश्वर ने उसे शारीरिक बल का वरदान दिया है। इसलिए उसका कर्तव्य है कि वह अपनी शक्ति को देश की सेवा में लगाये ।

निवेदन है कि हमारा युवा वर्ग अपनी शक्ति को पहचाने और रचनात्मक कार्यों में उसका प्रयोग करे। ऐसा करने से वह सच्चा युवा होने का परिचय देगा। संसार उसे सभ्य, यजमान और वीर कहेगा।

पुलकामो हि मर्त्यः

मनुष्य स्वभाव से ही बहुत कामनाओं वाला होता है

श्रीमती डॉ० चेतना शर्मा बद्री

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में लोकप्रिय होने की कामना करता है। यह कोई गलत नहीं है क्योंकि लोकप्रिय होना व्यक्ति विशेष की महानता का प्रतीक होता है। सबकी यह इच्छा होती है कि समाज में उसका अपना स्थान हो, लोग उसे सम्मान दें आदर की दृष्टि से देखें। उसके चाहने वाले जब कठिन परिस्थिति में उसके पास हों और वह उन कठिनाइयों को दूर कर सके या निदान का उपाय बता सके। समाज की नज़रों में अपने आपको एक व्यक्ति विशेष जानकर मनुष्य कितना प्रसन्न हो जाता है। वह सोचता है कि मैं अब एक साधारण आदमी नहीं हूँ, उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। उसका मन हिरण की तरह दौड़ने लगता है।

इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं हो सकता कि मान-सम्मान पाने के लिए मनुष्य सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने का प्रयास करने लगे तथा ओछे हथकण्डे अपनाने लग जाये। जैसे इस संसार में लाखों लोग कर रहे हैं। परन्तु ऐसा करने से मनुष्य स्वयं का शत्रु बनकर अपने पैर में कुल्हाड़ी मार लेता है। इससे अपनी ही हानि व जग हँसाई होती है।

इस संसार में लोकप्रिय बनने के लिए व्यक्ति और समाज की भलाई के लिए कुछ विशेष कार्य करने पड़ते हैं, लोक रंजन के लिए नहीं। लोकरंजन के लिए मनुष्य को अनेक प्रकार से समझौते करने पड़ते हैं, इसलिए ऐसे कार्य जनसाधारण के हित के लिए न होकर स्वयं के हित साधक बन जाते हैं। किसी भी दृष्टि से ये कार्य उचित नहीं बताये जा सकते। वस्तुतः देश, धर्म व समाज के हित के लिए निःस्वार्थ भाव से किये गये कार्यों के द्वारा मनुष्य लोकप्रिय होता है। मोमबत्ती की तरह स्वयं को तपाकर पिघला कर दूसरों को प्रकाश देना वास्तव में परोपकारी कार्य है अन्यथा दिखावा करने वालों की इस संसार में कमी नहीं हैं, जिन्हें देखकर लोगों के मन में आक्रोश उत्पन्न हो जाता है। यह तो सत्य है ढोंग करने वाले समाज में कभी भी अपना स्थान नहीं बना पाते चाहे लाखों रुपये खर्च कर दें। इस प्रकार के लोगों की यह मानसिकता होती है कि वे पैसे के बल से वे मान-सम्मान व लोकप्रियता प्राप्त कर लेंगे, परन्तु यह उनकी भूल है ।

यदि पैसों से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता तो धनवानों का ही बोलबाला होता, साधारण मनुष्य तो कभी आगे बढ़ ही नहीं सकता था। लोकप्रिय बनने के लिए मनुष्य का व्यवहार व चाल-चलन सबसे महत्वपूर्ण होता है। अहंकारी नहीं होना चाहिए, सबका सम्मान करना चाहिए, सबको एकसमान देखना चाहिए, सबकी समस्याओं का निदान करना चाहिए। दूसरों का हित करने के लिए बादलों के समान सदैव नीचे ही देखते रहना चाहिए। देने के कारण बादलों का स्थान सदैव ऊपर और संचय करने के कारण समुद्र का स्थान नीचे होता है। इसलिए समाज के हितकारी व्यक्ति का हृदय सरल, सहज, मधुर और शीतल होना चाहिए । इन सद्गुणों का त्याग कभी नहीं करना चाहिए।

बोलते समय वाणी पर संयम रखना चाहिए, ऐसा न हो आपकी वाणी की कठोरता किसी को हानि पहुँचाए और उसकी लोकनिन्दा का कारण बन जाए। इस प्रकार लोक प्रिय होते-होते आप निन्दा का पात्र भी बन सकते हैं इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सदैव दूसरों को सम्मानजनक शब्दों से सम्बोधित करना चाहिए, अहं के द्योतक शब्दों का उपयोग न करें। इस प्रकार वाणी और व्यवहार का संयम दूसरों के हृदय में स्थान बना देता है। फिर मनुष्य को इस संसार में लोकप्रिय होने से कोई शक्ति नहीं रोक सकती ।

महामुनि नारद

विश्वदेव मुनि, वानप्रस्थी

छान्दोग्योपनिषद् पर आधारित

ऐसी कथा प्रचलित है कि नारद मुनि लोक-लोकान्तरों का भ्रमण करते रहते थे। ज्ञानी होते हुए भी वे अपने ज्ञान को अपूर्ण समझते थे। ज्ञान की इस कमी की पूर्ति करने के उद्देश्य से आदित्य ब्रह्मचारि ऋषि सनत्कुमार जी के पास पहुंचे, और प्रार्थना की कि वह ज्ञान की वृद्धि के लिये उनके पास आये हैं। ऋषि जी ने उनको अपने शिष्य बनाने को स्वीकार कर लिया। परम्परा के अनुसार गुरु जी ने शिष्य से पूछा कि उसका ज्ञान कहाँ तक है। नारद जी ने अपने ज्ञान की पूरी सूची दे दी, अर्थात् चारों वेद, इतिहास-पुराण, राशि, दैव-विद्या, निधि-शास्त्र, तर्क-शास्त्र,

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

पृष्ठ २ का शेष भाग

नीति-शास्त्र, ब्रह्म-विद्या, क्षत्र-विद्या, नक्षत्र-विद्या, ललित-कला, ज्योतिष्शास्त्र, भूत-विद्या आदि पढ़ा, सब विद्याएँ कंठस्थ हैं, अर्थात् 'मंत्रविद्' ही हुआ हूँ, 'आत्मविद्' नहीं हुआ – **सः अहम् मन्त्रविद् एव अस्ति न आत्मविद्**। मैं ज्ञान से अपूर्ण हूँ। मन चंचल, अशान्त है, मोह मायाधरा रहता है। बड़े-बड़े विद्वानों से सुना है कि आत्मा के ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होती है। प्रभु ! मुझे आत्मा का ज्ञान दीजिए, शोक-सागर के पार उतार दीजिए – **तं मा भगवान् शोक रूप पारंतरयतु** ।

ऋषि सनत्कुमार का उपदेश

नारद ! तुमने वेदादि शास्त्रों के अर्थ ज्ञान प्राप्त तो कर लिया, यह तो नाम-मात्र – नाम-ब्रह्म शब्द-ज्ञान तक ही पहुँचे हो, आत्म-ज्ञान तक नहीं ।

भगवन् ! नाम-ब्रह्म के आगे का ज्ञान मुझे दीजिए। यहाँ से ऋषि सनत्कुमार उत्तरोत्तर प्रश्नोत्तर के द्वारा नारद का आत्मज्ञान देना आरम्भ करता है। उपनिषद् के ऋषियों ने प्रश्न पुछने को प्रोत्साहित किया है।

प्रश्न पुछना बन्द मत करें !

गुरु का उत्तर – नाम-ब्रह्म से आगे **वाणी-ब्रह्म** है। तुम वाणी की उपासना करो।

नारद-वाणी से बड़ा और कुछ है?

गुरु – हाँ है । मन वाणी से बड़ा है। मन इच्छा करता है, मंत्र पढ़ने लगता है, मन को ही आत्मा मानो। मन ही मानो ब्रह्म है। वाणी से उच्चारण होती है। अतः नाम तथा वाणी से मन बड़ा है; तुम मन की उपासना करो।

नारद कोई साधारण शिष्य नहीं थे। सोच-विचार करके पूनः पुछते हैं – मन से बड़ा और हो तो मुझे उपदेश दीजिए। सनत्कुमार :– *मन से बड़ा संकल्प है। मन तो चंचल है, सकंल्प मन पर लगाम लगाता है,* बांधता है। मनुष्य संकल्प करता है, मन में मनन करके वाणी को प्रेरित करता है, शब्द उच्चारण कराता है, नाम कर्म-काण्ड की नीव है, नाम मन्त्रों में समा जाते हैं, शब्दों के समूह ही मन्त्र है, मन्त्र कर्म-काण्ड की नींव है।

पुरे ब्रह्मण्ड तथा पिंड में संकल्प ही संकल्प दिखाई देता है। द्यु, पृथिवी, आकाश, वायु, जल, तेज़, वर्षा, अन्न, प्राण, मन्त्र, कर्म, लोक; लोक के संकल्प से सब-कुछ चल रहा है, एक दूसरे पर आश्रित, विश्व में सब जगह संकल्प-ही-संकल्प कार्य कर रहा है। नारद ! तू 'संकल्प' की उपासना कर। आगे कुछ और? हाँ। **चित्त-ब्रह्म** है। *मनुष्य कब संकल्प करता है? जब उसका चित्त उस संकल्प के लिए तैयार, उत्तसाहित हो जाता है।* नारद पुनः प्रश्न करता है, और गुरु उत्तर देता – चित्त से **'ध्यान'** महत्त्व का है। ध्यान से ही महत्त्व सिद्ध होता है। यह गुण विद्वानों का है। जो अल्पज्ञ है, क्षुद्र हैं, ध्यान से कलह मचाते हैं।

'ध्यान' से आगे **विज्ञान-ब्रह्म** है। अनेक विकल्पों में से एक पर रूक जाना ध्यान है। अब जो चुना जाय, अच्छी हो सकती है, बूरी भी, अल्प भी, महान् भी । जो अच्छे या महान् को चुनते हैं, वे विज्ञान ब्रह्मा की उपासना करता है।

यहाँ तक गुरु सनत्कुमार ने क्रम से एक एक का महत्त्व बतलाते हुए नारद को मनोवैज्ञानिक-क्षेत्र (Psychology) तक का ज्ञान दिखलाया; अब भौतिक-क्षेत्र (materialistic-field) पर ले आते हैं। जिज्ञासा की प्यास बुझाने के लिए उत्तर देते हुए कहा कि विज्ञान-ब्रह्म से आगे **बल-ब्रह्म** है। विज्ञान तक मानसिक क्षेत्र था, बल तो शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक सब तरह का होता है। एक बलवान बहुत विज्ञानवालों को डरा, हारा सकता है। जबकि विज्ञानवान बलवान होता है तब कोइ भी काम करने को तैयार हो जाता है। (देखें महाऋषि दयानन्द को !!)। गुरु की सेवा में लग जाता है, उसे गुरु-प्रसाद प्राप्त होता है, जिससे वह **तत्त्व-ज्ञान** का द्रष्टा, श्रोता, मन्ता, बोद्धा, कर्त्ता, विज्ञाता हो जाता है। नारद ने पूछा कि **बल-ब्रह्मा** से आगे ? बल सृष्टि का आधार है ।

गुरु ने कहा – **अन्न-ब्रह्म** है। यदि कोई दस दिन अन्न लेना छोड़ दे, फिर भी जीता रहे, तो उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ काम करना रुक जाती हैं, वह अद्रष्टा, अश्रोता, अमन्ता आदि हो जाता है। पर जब खाने लगे तो सब इन्द्रियाँ काम करने लग जाती हैं। अन्न के आगे **जल-ब्रह्म** है। जल के बिना जीवन नहीं चल सकता। जल के बाद **तेज़-ब्रह्म** है। तेज के आगे आकाश-ब्रह्म है ।

नाम से लेकर विज्ञान तक – इन मनोवैज्ञानिक-तत्वों से एका-एक के महत्व को महत्वशाली बताते हुए ऋषि सनत्कुमार ने भौतिक-तत्वों – बल, अन्न, जल, तेज़, आकाश – इन तत्वों का महत्व पर आकर समझाया कि भौतिक-तत्वों के बिना मनोवैज्ञानिक-तत्व बेकार हो जाते हैं। भौतिक-तत्व मनोवैज्ञानिक – तत्वों का आधार है, इनके बिना वे जीवित नहीं रह सकता है। अथः भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक-तत्वों को लेकर आध्यात्मिक-तत्वों की ओर नारद का ध्यान आकर्षित करता है। ऋषि ने कहा कि आकाश में शब्द आता है चला जाता है, टिकता नहीं। तो कहा कि **स्मृति-तत्व** आकाश-ब्रह्म से बड़ा है। स्मरण-शक्ति से शब्द स्मृति में टिक जाता है। स्मृति से आगे **आशा-ब्रह्म** है। स्मृति तो भूत-बिती हुई बातों से जुड़ा होता है, 'आशा' भविष्य से। स्मृति से आगे **प्राण-ब्रह्म** बड़ा है। आशा तो जीवन के लिये ही तो है। रथ के को उदाहरण लेकर बताते हैं कि जैसे सब अरे नाभि से जुड़े होते हैं, वैसे ही 'नाम' से लेकर 'प्राण' तक जीवन का अस्तित्व है, प्राण-रूरी चक्र में। संसार से सब गोरख-धंधा प्राण पर ही टिका हुआ है।

जो इस प्रकार देखता है, मानता है और जानता है अर्थात् नाम से लेकर प्राण तक जो पहुँच जाता है उसे लोग 'अतिवादी' कहें, बकवादी नहीं ! तो उसे स्वीकार करना पड़ेगा। अतिवादी का अर्थ है जो व्यक्ति आरम्भ से लेकर अन्त तक सत्य को जान लेता है :–

एषः तु वै अतिवदति यः सत्येन अतिवदति।

नारद को सत्य-ज्ञान का उपदेश

नारद मुनि ऋषि सनत्कुमार से प्रार्थना करता है कि – हे भगवन् ! मुझे सत्य का ज्ञान दीजिए।

गुरु ने कहा – सत्य ज्ञान में मनन करने की शक्ति, श्रद्धा, निष्ठा, कर्मण्यता आवश्यक है। कर्म करने के लिये प्रेरणाशिल होना चाहिये और विश्वास करें कि उस कर्म से मुझे सुख प्राप्त होगा । नारद ने कहा - प्रभु ! मुझे **सुख** का उपदेश दीजिए। गुरु ने कहा जो **भूमा** है वही सुख है, जो निस्सीम, जिसकी सीमा नहीं है, unlimited, है —

यः वै भूमा तत् सुखम् ।

जो अल्प है, ससीम - limited है, उस में सुख नहीं – **न अल्पे सुखम् अस्ति।**

स्मरण करो कि भूमा ही सुख है। इसि को जानना चाहिए। नारदः मुझे भूमा का उपदेश दीजिए। गुरु ने कहा – जो परम शुद्ध अवस्था में अन्य और कुछ न देखता, न सुनता, न जानता – वह निस्सीम, अद्वितीय अवस्था ही भूमा है । जो मनुष्य इस अवस्था में अन्य वस्तु देखता है, सुनता है और जानता है वह अल्प है और अल्प मरण-धर्मा है ।

क्रमशः

वाल्मीकि रामायण और वेद

श्रीमती यमावन्ती चूड़ामणि

संसार भर के संस्कृत महाकाव्यों में महर्षि वाल्मीकि की रची रामायण का स्थान सबसे ऊँचा है। इस महाकाव्य में मानव धर्म, प्रभु भक्ति और वेदानुकूल मनुष्य के दिव्य गुणों का जैसा वर्णन वाल्मीकि ऋषि ने किया है वैसा किसी अन्य ग्रंथ में नहीं है। वाल्मीकि रामायण संस्कृत का प्रथम महाकाव्य है, प्राचीन आर्य सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण है। अतः वाल्मीकि ऋषि जी को संस्कृत भाषा का आदि कवि एवं वैदिक ज्ञान प्रवर्तक माना जाता है।

वाल्मीकि ऋषि ऊँच कोटि के धर्मात्मा थे। वे ऋषि सन्तान थे। कुछ लोगों का कहना है कि वे डाकू और हत्यारे थे, बाद में संन्यासी बने। यह बात सही नहीं है। वाल्मीकि डाकू कोई और होगा, रामायण लिखने वाला वाल्मीकि ऋषि नहीं। रामायण का रचयिता वाल्मीकि ऋषि तो चारों वेदों के पूर्णज्ञाता थे। वेद की शिक्षाओं को ही उन्होंने श्री रामचन्द्र जी के माध्यम से सारे विश्व को बताया। रामायण के आरम्भ में ही एक मनोहरी श्लोक द्वारा वाल्मीकि बताते हैं कि परमात्मा वेद-वद्य है, अर्थात् केवल वेदों के द्वारा ही परमात्मा को जाना जा सकता है। जिस प्रकार वेद समस्त मानव कल्याण के लिए है उसी प्रकार वाल्मीकि रामायण भी जन कल्याण हेतु ही लिखी गयी है। अन्तर केवल इतना है कि वेद की बातें गूढ़ हैं जब कि रामायण में वेदों का भाव अति सरलता से बताया गया है। वाल्मीकि जी का कथन है कि यज्ञ और योग में बहुत समानताएँ हैं। मनुष्य अगर विनाश से बचना चाहे तो उन्हें यज्ञ और योग दोनों करना चाहिए। ऐसा करने वाले पुरुषार्थी कहलाते हैं। जिस व्यक्ति में पुरुषार्थ होता है वह हमेशा क्रियाशील, अनुशासित और परोपकारी होता है।

रामायण में वाल्मीकि जी ने श्री रामचन्द्र जी का मर्यादित एवं यथार्थ जीवन एकदम खुलकर बताया है। उन्होंने किसी बात को भी बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन नहीं किया है। जीवनकाल में श्री रामचन्द्र जी को अनेक कठिन परिस्थितियों से गुज़रना पड़ा था जैसे राजगद्दी के बदले में बनवास प्राप्त करना, उनकी अनुपस्थिति में पिता की मृत्यु, बनवास के समय सीता और लक्ष्मण को भी कष्टप्रद जीवन का भोग, सीता हरण, रावण तथा अन्य राक्षसों से युद्ध इत्यादि। इन घटनाओं से महर्षि जी बताना चाहते थे कि किसी भी विषम समय में, दुखों का पहाड़ भी टूट पड़े, तो मनुष्य को घबड़ाना नहीं चाहिए बल्कि अपनी बुद्धि और विवेक के बल से धैर्य पूर्वक उन सबका सामना करना चाहिए। वाल्मीकि ऋषि ने वेदानुकूल श्री रामचन्द्र जी के आदर्श जीवन का जैसा वर्णन किया है वैसा आदर्श जीवन वाला मिलना कठिन है। रामायण पूरे विश्व के लिए एक प्रेरणाप्रद ग्रन्थ है। उसमें संसार के समस्त मानव के जीवन उत्थान के लिए महत्वपूर्ण शिक्षाएँ भरी पड़ी हैं। वाल्मीकि रामायण वेद ज्ञान का ही दर्पण है ।

स्कूल वार्षिकोत्सव

एस. प्रीतम

आर्य सभा के तत्वावधान में, प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद् से सहयोग से मेनिल आर्य समाज ने अपने स्कूल का ८७ वाँ वार्षिकोत्सव और एरमिताज़ आर्यसमाज ने ५२ वाँ वार्षिकोत्सव मनाया। दोनों में हमें हाज़िर होने का मौका मिला।

मेनिल में प्रातःकाल ८.३० बजे स्कूली बच्चों और एक दो समाज के सदस्यों को लेकर पंडिता गोकुल ने देवयज्ञ से कार्य का आरम्भ किया और एरमिताज़ में भी वहाँ के पुरोहित-पुरोहिता द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ।

मेनिल में हमारे साथ आर्य सभा के उपमंत्री एवं प्लेन विलियेम्स ज़िला परिषद् के अध्यक्ष श्री रविन्द्रसिंह गौड जी उपस्थित थे। चूंकि हमें एरमिताज़ के लिए रवाना होना था, हम दोनों को सम्बोधन करने का मौका दे दिया गया।

एरमिताज़ में क्योंकि स्थानापन्न प्रधान मंत्री जनाब सौकत अलि सुदन की उपस्थिति होने वाली थी इसलिए उस इलाके के दो पी.पी.एस. **१.** तुलसीराज बेनीदीन और **२.** श्री ब्वासेजों भी आ गये। छोटा सा मंदिर खचाखच भरा था बारी-बारी से बच्चों द्वारा रोचक कार्यक्रम पेश किये गये और सभा के मंत्री और उपमन्त्री के भी संदेश सुनने का मौका लोगों को मिला।

स्थानापन्न प्रधान मंत्री ने अपने भाषण के अन्तर्गत कहा कि वे कुछ दिनों से सोच रहे हैं कि नौजवान एवं नौयुवतियों को समाज की ओर खींचने के लिए हरेक मंदिर में एक केन्द्र बनायेंगे जहाँ पर नौजवानों को बुलाया जाएगा और पूछा जाएगा कि उन्हें क्या चाहिए। फिर आगे कहा कि सेंक आरपाँ में एक विशाल मंदिर बनाने के लिए वे कोठी वालों से एक टूकड़ा ज़मीन माँगेंगे। वाले पीतो वाली ज़मीन बहुत जल्दी आर्य सभा मोरिसस के नाम कर रहे हैं।

सच्चा और पूरा आस्तिक

केवल पूजा पाठ, मन्त्र जाप, मन्दिर दर्शन, डोरा, धागा, चोटी, तीर्थ यात्रा, यज्ञ, कंठी-माला-दुपट्टाधारण, तिलक, दान, श्राद्ध, सेवा आदि करने वाला मनुष्य सच्चा व पूरा आस्तिक नहीं बनता है। अपितु सत्य का पालन, चौरी का त्याग, धैर्य, प्रेम पूर्वक व्यवहार, निष्पक्षता, दया, क्षमा, संयम, निष्कामता आदि उत्तम गुणों को धारण करने से सच्चा व पूरा आस्तिक बनता है ।

125th Anniversary of Tanda Arya Samaj *cum* International Vedic Conference

Gian Dhunnookchand

Shatabdottara Rajata Jayanti Samaroha Arya Samaj Tanda, UP, India.

Sri Gian Dhunnookchand, delegated by Dr O.N. Gangoo to participate in the celebration of the 125th anniversary of Arya Samaj Tanda from 10th to 14th November 2016, presented two papers, namely – the role of Arya Samaj in Mauritius and Youth Awakening.

Tanda Arya Samaj is situated on the bank of Saryu river and is connected with the historic city of Ayodhya where Swami Dayanand wrote his famous book *'Rigvedadibhasyabhumika'*. The Tanda Arya Samaj was established in 1892 to eradicate social evils, superstitions and work for women education and downtrodden. In 1944 Babu Mishrilal who was devoted to Swami Dayanand's Vedic thought laid the foundation of 'Arya Kanya Vidyalaya'. Leaders like Mahatma Gandhi, Acharya Kriplani and Sarojni Naidu came to Tanda and appreciated the noble work of Tanda Arya Samaj.

Although Tanda is a Muslim majority city, yet the entire Muslim families feel proud in sending their daughters in 'Arya Kanya inter college'. Muslim students of this college chant Vedic hymns, speak Sanskrit and participate in all functions. This year Tanda Arya Samaj celebrated its 125th anniversary at International level. The main themes of the conference were: (i) Science in the Vedas, (ii) Youth Awakening, (iii) Women empowerment, (iv) Rastra raksha, (v) Arsha Siddhanta, (vi) Child development and clean.

Besides paper presenting, other items were : India campaign, shank samdhn, kavi sammelan, performance of valour by *'Arya Virangana'*, cultural programme and regular performance of *'Samvediya Yajna'*. Leaders of Arya Samaj, Swami's, Acharya's and Scholars from all over India and abroad attended the conference. The article below is the replication of Sri Gian's first paper.

The Role of Arya Samaj in Mauritius

Distinguished Guests – Brothers and Sisters –

I bring to your great country, India, the greetings of the people of rainbow island, Mauritius. The water of Hind Maha Sagar and our ancestral blood unite us in a unique relationship of mutual love and brotherhood. Both Mauritius and India take inspiration from the same tradition and culture. Both countries have adopted democracy, socialism and secularism for social advancement. In International forum our two countries support peace and intercultural understanding. I have come here to your great country India on a historical occasion. Today the 125 th anniversary of Arya Samaj Tanda is being celebrated with great enthusiasm. Apart from India, representatives of other countries are also assembled here. I offer to all of them our cordial greetings. Well, today I shall be sharing information about the role of Arya Samaj in Mauritius, but before this it is important to understand the true historical perspective in which Indians lived.

Mauritius, a small island of 61 kilometres long and 47 kilometres wide, about 3,200 kilometres from India, situated in the Indian Ocean, is well known for its natural scenery, beautiful beaches and green sugar cane fields. According to Mark Twain, the American writer, God created Mauritius first and then used it as a model to create heaven.

There were no aborigines when the island was colonised by Portuguese, Dutch and French. In 1810, the British captured Mauritius (then called Ile de France) and governed it for 158 years. Mauritius got its independence in 1968 and today it is a Republic. The population of Mauritius is about 1,200,000.

After the abolition of slavery in 1833, the Negro slaves refused to work in the fields. Subsequently the sugar industry was jeopardized seriously.

To replace slaves the British Government turned towards India which was also a British colony and a cheap source of Labour. From 1834 to 1910 about 454,000 Indians including men, women and children migrated to Mauritius. They are our forefathers, who according to the contract had to work from dawn to dusk for six days. Sunday was unpaid labour. The Indian workers were ill-treated by their colonial masters. In those difficult moments Indian immigrants found great solace and peace in chanting the verses from Ramcharitamanas.

Through the hard work of the Indian indentured labourers, their sacrifice and perseverance, Mauritius prospered and became wealthy.

Mauritius, now looks green and beautiful, but behind this beauty are hidden the sad and painful stories of the Indian labourers. In 1901, on his way to India from South Africa, Mahatma Gandhi had a transit of 21 days in Mauritius. He was greatly distressed by the pitiable plight of the Indian immigrants. He gave a few talks to boost the morale of the Indians. He encouraged them to send their children to schools and to participate in politics.

On reaching India, he sent barrister Manilall Doctor to help he Indians to fight against exploitation and injustice.

Under British rule the Christian missionaries were aggressively converting the Indians either forcibly or tempting them with jobs, promotion or securing for them seats in heaven.

In a way Hinduism was not serving human cause. The Hindu society was clouded by blind beliefs and superstitions. Unnecessary rites and rituals beliefs in ghosts etc had degenerated Hinduism from its pristine purity. Hinduism had become a subject of mockery by Christian missionaries. It is in this deplorable environment that Satyartha Prakash, the 'Magnum Opus' of Swam Dayanand was brought to Mauritius.

Just like before the advent of Swami Dayanand in India, the reading of the Vedas had become a thing of the past in the same way before the establishment of Arya Samaj in Mauritius the wisdom of Vedic Scriptures was unknown to the Hindus.

The Western colonizers demonstrated to the Hindus that our forefathers were barbarians and our religion of mythology was full of superstitions and blind beliefs. What is shocking is that worshiping of various Deities, trees, rivers, ghosts, offering animal sacrifices, and unnecessary rites and rituals were common. Some sections of the society were deprived of rights to study scriptures. Girls were deprived of education. The literacy rate among the Hindus was extremely low. The plight of women was pitiable. In such dark times, Bholanath Tiwari, a soldier serving in the British army, while leaving Mauritius handed over a copy of Sayartha Prakash to Khemlall in 1902.

Mr Khemlall and Mr Daljitlall were greatly impressed by Satyartha Prakash. Soon they started spreading the message of Swami Dayanand to every nook and corner of Mauritius and strongly opposed conversion of Hindus. They had to face a lot of opposition when they wanted to bring reform and transform in the society. In 1903 Arya Samaj was founded in Curepipe, a town, in the centre of Mauritius but due to shortage of priests and preachers the activities of Arya samaj could not continue. Three years later Arya Samaj was founded again in the same place but this time due to strong opposition from the orthodox Hindus Arya Samaj could not flourish.

On the advice of Manilall Doctor, Dr Chiranjiv Bhardwaj, a staunch follower of Swami Dayanand and a champion of Arya Samaj came to Mauritius along with his wife Sumangali Devi in 1911. Later, he bought a plot of land for Arya Samaj in Port Louis, the capital of Mauritius, where the headquarter of Arya Samaj and DAV college are functioning at present.

Dr Chiranjiv Bhardwaj with the support of some dedicated social workers founded 'Arya Paropkarini Sabha'. Subsequently the activities of Arya Samaj gathered momentum in Mauritius. Several educated persons also joined the Arya Samaj movement.

Dr Chiranjiv Bhardwaj treated the patients during daytime and in the evening he was teaching Hindi and delivering religious discourses in far away villages. He showed the people the disadvantages of child marriage, denial of education to girls and how inhuman caste system was being practised. He would cover ten kilometres on foot to spread the message of the Arya Samaj. His wife was giving lecture on the importance of woman education. In due course of time, Indian women Association was set up with the aim to bring reform in the society. It was rare in those days to see a woman speaking Hindi fluently.

Meanwhile some Mauritian scholars who studied from Lahore came back to wage a relentless war against illiteracy and social evils prevailing in the Hindu community.

Thereafter Swami Swatantranand, Swami Dhruvanand, Swami Abhedanand and other Vedic scholars came to Mauritius to spread the Vedic teachings. Swmai Swatantranand ji founded several branches of Arya Samaj to carry forward the works of Swami Dayanand. Pandit Kashinath Kisto, after completing his studies in Lahore came to Mauritius to popularize Hindi language and Vedic studies. He bought a plot of land in Vacoas and founded Aryan Vedic School which is actually one of the best Primary Schools in Mauritius.

Glory to those noble, unselfish, great stalwarts who struggled hard to sow the seed of Arya Samaj on the Mauritian soil and made Hinduism free from meaningless rites, rituals and unnecessary elements. It has been rightly pointed out that these reformers gave the medical herb (sanjivani buti) to strengthen Hinduism and Hindi.

It is well known that before the advent of Satyartha Prakash on Mauritian soil Ramcharitmanas of Tulsidas was known to the Hindus. Ramcharitmanas is in Awadhi (medieval Hindi) whereas Satyartha Prakash is in Khari Boli (modern Hindi). To spread the message of the Arya Samaj great efforts were made to learn and teach modern Hindi. Hindi became easy to understand. What is strange is that some people even considered Hindi as the language of Arya Samaj because Arya Samajist priests would speak Hindi on all occasions. Compared to Bhojpuri. Hindi spread rapidly. Any Arya Samajist would consider it his duty to speak in Hindi.

The leaders of the Arya Samaj have spared no efforts to make Hindi a subject of study from primary to University level. Hats off for those dedicated workers.

There was a time in Mauritius when only educated people were allowed to cast their votes in election. The Hindi movement started by Arya Samaj and other Hindi organisations gave the largest number of voters as election was based on literate people.

Some year back Arya Sabha was running religious examinations such as Vidya Vinod, Vidya Visharad, Vidya Ratna and Vidya Vachaspati to promote Hindi and Vedic Studies. These days these exams have been replaced by other well structured courses. A 'Vidya Samiti' has been set up to help and supervise 200 evening schools in Mauritius and to organize religious examinations.

Today these are about 400 branches of Arya Samaj in Mauritius. In all these branches Hindi is the medium of Communication and is taught as a language and also as a medium for Vedic knowledge. Hindi newspaper, Souvenir Magazines are published to promote Hindi and Vedic studies. In DAV colleges and Maharshi Dayanand Institute Hindi and Hinduism are prescribed in the syllabus. A weekly programme on Radio called 'Vedic Vani' and regular programme based on Vedas and Satyartha Prakash on TV are appreciated by a large population of the country.

Besides promoting Hindi and Hinduism, Arya Samaj carries a crusade against social evils such as alcoholism, drug abuse, playing of dice, child marriage, dancing of prostitutes during wedding ceremony, denial of girl's education, discrimination on the basis of birth etc.

Weekly gathering for yajna and satsang in all Sabhas, continuous shravani yajna for over a month on a yearly basis, celebration of Rishi Bodh, Swami Dayanand Nirvana divas, yajna for birthdays, wedding and other samskaras according to Vedic rites are commonly seen in Mauritius today.

The other main activities of Arya Samaj are : orphanage for old people, training courses for Hindu priests, hoisting Aum flag in every home etc. This Aum flag has brought unity between the two main Hindu organisations : Arya Samaj and Sanatan Sabha.

Actually, the Arya Samaj organization has taken a well-structured form at local, regional and national levels. All four hundred branches comprise a general wing, a woman wing and a youth wing. The center Arya Sabha Mauritius initiates and structures activities which are vulgarized by the individual units. It coordinates facilitates and motivates the entire island in dispensing Vedic rites, Hindi & Hinduism teachings and Vedic knowledge. The organization is run by a democratically elected President and executive committee at national level and the actual Chairman is Dr Oudaye Narain Gangoo.

The Arya Samaj in Mauritius is a religious organization that promotes, peace, love and harmony. It has set its face against violence, bloodshed and disorder. The Arya Samaj has played a significant role and is still paying a remarkable role in regenerating Hinduism.

The Arya Samaj has influenced the Hindus with new faith, vigour, strength and enthusiasm. It has been pointed out that as long as the Arya Samaj is active there is no fear of disloging Hinduism from its actual place.